Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 10059595

Roll No. 24040000008
Total Mark 54/75.00

Exam MASTER OF ARTS_ODD EXAM-DEC-24
Subject A020704T - BHARTIYA DARSHAN

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	2/5						
1B	1/5						
1C	3/5						
1D	3/5						
1E	5/5						
1F	5/5						
1G	3/5						
1H	3/5						
1I	3/5						
2	NA/15						
3	NA/15						
4	NA/15						
5	14/15						
6	12/15						
7	NA/15						
8	NA/15						
9	NA/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

Date of Exam: 04-01-2025 Shift: I[st] Room No.: 11
Paper Code: A020704T Subject: भारतीय दर्शन Year/Sem.: I[st]
Name of Candidate: SHANYA AGNIHOTRI
Roll No.: 2404000008

Signature of Candidate: Shanya Agnihotri
Signature of Invigilator
COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures — Max. Marks
Total Marks in Words

A020704T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course: M.A.
Session 2024-25 Year/Semester I[st]
Subject: भारतीय दर्शन

Paper Code: A020704T
Exam Date: 04-01-2025
Name of Candidate: SHANYA AGNIHOTRI
Father's Name: ONKAR AGNIHOTRI

महाविद्यालय का कोड College Code: FB01
परीक्षा केन्द्र का कोड Exam Centre Code: FB01

परीक्षा का प्रकार Type of Exam
संस्थागत Regular ●
भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex. Student
व्यक्तिगत Private
बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam

ANSWER BOOKLET NO.
10059595

A020704T
Paper Code

PART-IV

नामांकन संख्या Enrollment Number: CSJMA21001444 82

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2404000008

पेपर कोड Paper Code: A020704T

Shanya Agnihotri
Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. बॉक्स में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

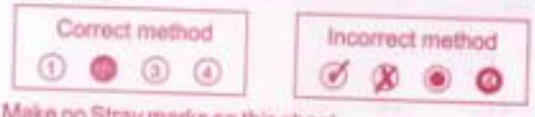

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में (1–24) से कम है या कटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पैंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कोपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Pape Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damag in your answer script, if found than change the answer scrip immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g Subject Code, Subject Name and Question of the Questio Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement o the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex-Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखें तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कोपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटफिक केल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में कागजे न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numberals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns.

Paper Code

01

खण्ड - अ

प्र०

उत्तर- 1(A) ईश्वरकृष्ण प्रणीत 'सांख्यकारिका' त्रिविध दुःखों का वर्णन किया गया है। संसार का प्रत्येक जीव दुःख का अनुभव करता है, वह दुःख निवारण के अनेक उपाय भी करता है किन्तु किसी भी उपाय द्वारा संसार के दुःखों से छुटकारा नहीं पाया जा सकता है। ये त्रिविध दुःख हैं -

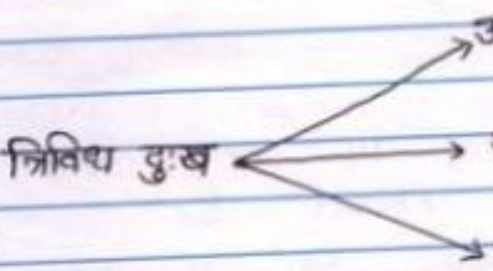

- आध्यात्मिक दुःख :-
आध्यात्मिक दुःख के अन्तर्गत दो प्रकार के दुःख होते हैं - 1- शारीरिक पीड़ा 2- मानसिक पीड़ा। शारीरिक पीड़ा के अन्तर्गत वात, पित्त, कफ आदि दोष आते हैं तथा मानसिक पीड़ा के अन्तर्गत ईर्ष्या, क्रोध, द्वेष आदि हैं। ये दोष इच्छा पूर्ति न होने पर होते हैं।

- आधिभौतिक दुःख :-
आधिभौतिक दुःख मनुष्यों, पशु, हिंसक पशुओं आदि द्वारा होता है।

- आधिदैविक दुःख :-
ये दुःख भूत, प्रेत, राक्षस, भूकम्प, वैश्विक महामारी आदि प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न होते हैं।

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर-1 (B) अध्यारोप :-

वेदान्त दर्शन एकमात्र ब्रह्म को ही सत्य मानता है तथा उसके अतिरिक्त सभी वस्तुएँ असत्य है।

"सत्यं ब्रह्म जगत् मिथ्या।"

अध्यारोप अज्ञान की शक्ति है अर्थात् अज्ञान के परिणाम स्वरूप ही अध्यारोप होता है। अध्यारोप का अर्थ है- एक वस्तु पर अन्य किसी वस्तु का आरोप। जब मनुष्य मिथ्यावश एक वस्तु पर किसी अन्य वस्तु का आरोप करता है तो वह अध्यारोप कहलाता है।

वेदान्त के अनुसार अध्यारोप की परिभाषा है- "सद् वस्तु पर असद् वस्तु का आरोप ही अध्यारोप कहलाता है।"

उदाहरणार्थ, पृथ्वी पर पड़ी हुयी रस्सी को मनुष्य अज्ञानवश अन्धकार में सर्प समझ बैठता है तथा उसमें सर्प की प्रतीति करने लगता है यही अध्यारोप कहलाता है। इसी प्रकार मनुष्य अपने अज्ञानवश ब्रह्म को नहीं समझ पाता है और इस संसार को ही सत्य मान लेता है। परन्तु एकमात्र ब्रह्म ही सत्य है। यही अध्यारोप होता है।

उत्तर-1 (C) 'साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्' :-

तर्कभाषा में प्रमाण की परिभाषा इस प्रकार है-

"प्रमाकरणं प्रमाणं"

तथा प्रमा का अर्थ है- यथार्थ प्रमा।

अर्थात् जो प्रमा का अध्ययन कराये वह प्रमाण

तथा यथार्थ वस्तु प्रमा कहलाती है।

तर्कभाषाकार केशवमिश्र ने चार प्रमाण माने हैं -

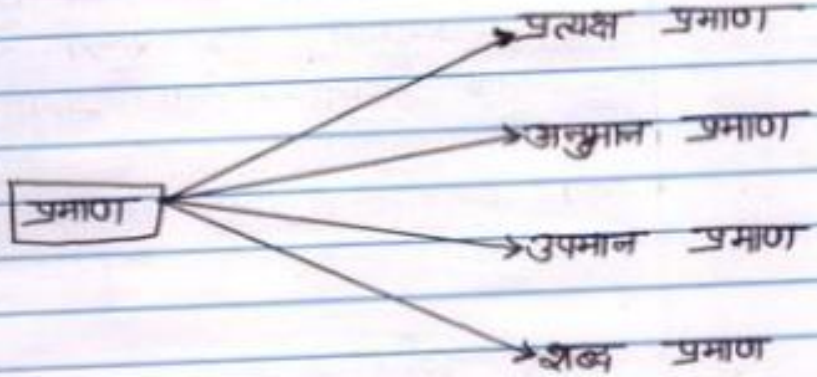

• प्रत्यक्ष प्रमाण :-

केशवमिश्र ने प्रत्यक्ष प्रमाण की परिभाषा इस प्रकार दी है -

"साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्"

अर्थात् जिस वस्तु का साक्षात् ज्ञान हो वह प्रत्यक्ष प्रमाण होता है।

जब वस्तु और इन्द्रियों का साक्षात् संयोग हो तथा उनके बीच कोई व्यवधान न हो वहा प्रत्यक्ष प्रमाण होता है।

उदाहरणार्थ, नेत्रों द्वारा घट को देखना, श्रोत्र द्वारा किसी की बात को सुनना आदि। यहाँ नेत्र का घट से तथा श्रोत्र का बात से सीधा सम्बन्ध है अतः यहाँ प्रत्यक्ष प्रमाण है।

उत्तर -1(D) केशवमिश्र ने अपने ग्रन्थ 'तर्कभाषा' में प्रमाण की परिभाषा इस प्रकार दी है -

"प्रमा करणं प्रमाणं"

अर्थात् जो प्रमा का अध्ययन करिये या प्रमा का ज्ञान कराये वह प्रमाण होता है। प्रमा का अर्थ है -

Do Not Write anything in this Portion

'यथार्थ प्रमा'।

प्रमाण की संख्या को लेकर विद्वान एकमत नहीं हैं। आस्तिक दर्शन के ही अन्तर्गत वैशेषिक प्रत्यक्ष, अनुमान तथा सांख्य, योग प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द तथा वेदान्त-मीमांसा प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द के अतिरिक्त अर्थापत्ति, अनुपलब्धि को भी तथा न्याय प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द प्रमाण को मानता है।

न्याय दर्शन :-

न्याय दर्शन के प्रणेता गौतम मुनि हैं। न्याय दर्शन चार प्रमाणों को मानता है -

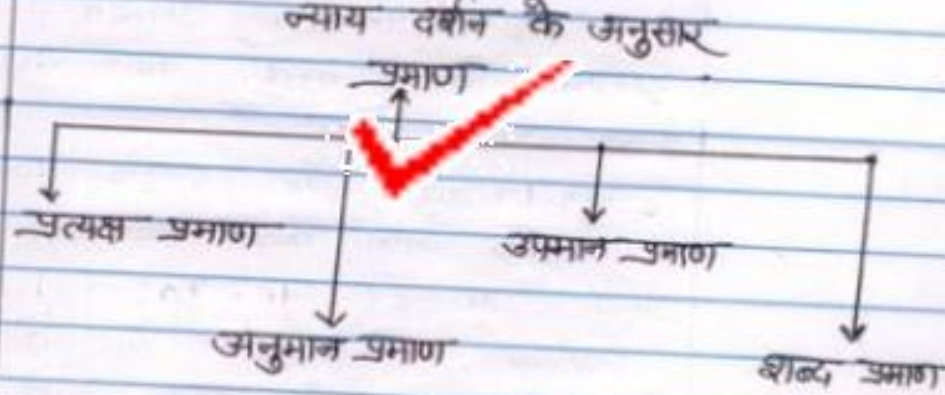

उत्तर-1 (E) सांख्य दर्शन दो तत्वों को मानता है - प्रकृति और पुरुष। प्रकृति अचेतन है तथा पुरुष चेतना। फिर यह प्रश्न उठता है कि चेतन और अचेतन का संयोग कैसे? प्रकृति और पुरुष लंगड़े और अंधे के समान अपने संयोग से सृष्टि का विकास करते हैं। जैसे अंधा देख नहीं पाता और लंगड़ा चल नहीं पाता। यदि लंगड़ा अंधे के ऊपर बैठ जाये तो वह उसे रास्ता बताता रहेगा। इसी

Paper Code

05

प्रकार अचेतन प्रकृति चेतन पुरुष के सहयोग से सृष्टि - विकास करती है।

सांख्य कार सृष्टि - क्रम के 25 अवयव मानते है -

1- प्रकृति
2- पुरुष
3- महत (बुद्धि)
4- अहंकार
5- मन

पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ (6 - 10)
6- चक्षु
7- श्रोत्र
8- त्वक्
9- घ्राण
10- जिह्वा

पञ्च कर्मेन्द्रियां (11- 15)
11- पाणि
12- पाद
13- पायु
14- उपस्थ
15- वाणी

पञ्च तनमात्राएँ (16 - 20)
16- शब्द
17- स्पर्श
18- रस
19- गन्ध
20- रूप

पञ्च महाभूत (21-25)
21- आकाश
22- वायु
23- तेज
24- जल
25- पृथ्वी

→ सृष्टि क्रम के 25 अवयव

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर-1 (F) वेदान्त सार के प्रारम्भ में अनुबन्ध-चतुष्टय के बारे में बताया गया है–

• अधिकारी • विषय • सम्बन्ध • प्रयोजन

साधन चतुष्टय : वेदान्त सार को पढ़ने वाले अधिकारी को साधन-चतुष्टय सम्पन्न होना चाहिए। ये चार साधन हैं —

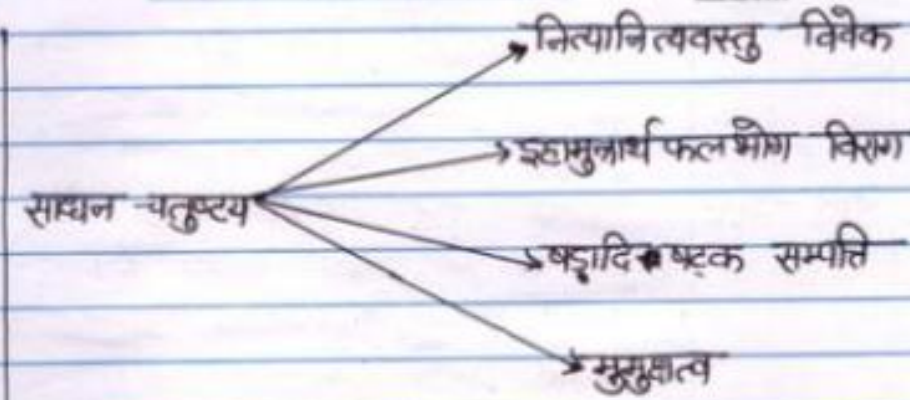

Do Not Write anything in this Portion

साधन चतुष्टय →
- नित्यानित्यवस्तु विवेक
- इहामुत्रार्थफलभोग विराग
- षट्सादि षट्क सम्पत्ति
- मुमुक्षत्व

• नित्यानित्यवस्तु विवेक :- वेदान्त सार एक मात्र ब्रह्म को ही सत्य मानते है तथा इसके अतिरिक्त सभी वस्तुएँ मिथ्या हैं। "सत्यं ब्रह्म जगन्मिथ्या।"

इस प्रकार मनुष्य को नित्य और अनित्य वस्तु का विवेक होना चाहिए। ब्रह्म नित्य है, संसार अनित्य।

• इहामुत्रार्थफलभोग विराग :- इह लोक और परलोक के भोग्य पदार्थों में विराग होना। इह लोक में काम, स्त्री आदि जो भोग्य पदार्थ हैं तथा परलोक के अमृतादि पदार्थों के प्रति उदासीन होना चाहिए।

• षडादि षट्क सम्पत्ति :- वेदाधिकारी को छः सम्पत्तियों से युक्त होना चाहिए। जो निम्न हैं -

१-शम २-दम ३-उपरति ४-तितिक्षा ५-समाधान ६-श्रद्धा

• मुमुक्षत्व :- उपर्युक्त प्रकार से सम्पन्न व्यक्ति को मोक्ष की इच्छा रखनी चाहिए।

अतः उपर्युक्त साधन चतुष्टय सम्पन्न प्रमाता ही वेद पढ़ने

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

08

का अधिकारी होता है।

उत्तर -1(ज) वेदान्त सार अद्वैत ब्रह्म है। अर्थात् यह एकमात्र ब्रह्म को ही सत्य मानता है।
वेदान्त सार के प्रणेता 'सदानन्द योगीन्द्र' दो प्रकार के शरीर मानते हैं –
- स्थूल शरीर
- सूक्ष्म शरीर

सूक्ष्म शरीर जीवात्मा होती है तथा स्थूल शरीर को लिङ्ग शरीर भी कहते हैं।
वेदान्त सार के अनुसार लिङ्ग शरीर का निर्माण 17 अवयवों से हुआ है –

1- बुद्धि
2- मन
पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ (3-7)
3- चक्षु
4- श्रोत्र
5- त्वक्
6- घ्राण
7- जिह्वा
पञ्च कर्मेन्द्रियाँ (8-12)
8- वाणी
9- ~~वाणी~~ पाणि
10- पाद
11- पायु
12- उपस्थ
पञ्च महाभूत (13-17)
13- आकाश
14- वायु

Paper Code

09

15- तेज

16- जल

17- पृथ्वी

उत्तर-1(H) तर्कभाषाकार केशव मिश्र ने उपमान प्रमाण को इस प्रकार बताया है —

अतिदिष्ट वाक्य का ~~ज्ञान~~ स्मरण होने पर गौ और गवय (नीलगाय) का भेद होना ही उपमान प्रमाण कहलाता है।

"यथा गौ तथा गवयः"

अर्थात् एक व्यक्ति ने कहा जैसी गाय होती है वैसी ही गवय (नीलगाय) होती है। उसके पश्चात् दूसरा नागरिक जिसने यह बात सुनी वह एक वनप्रदेश गया वहाँ उसने गाय के समान ही एक दूसरा चौपाया पशु देखा। तभी उसे 'यथा गौ तथा गवयः' का स्मरण होने पर वह जान जाता है कि यह नीलगाय है।

अर्थात् एक वस्तु के ज्ञान होने से ~~पर~~ दूसरे वस्तु का ज्ञान होना ही अनुमान प्रमाण है।

प्रमाण (प्रमाकरणं प्रमाणं) चार प्रकार के होते हैं-

- प्रत्यक्ष प्रमाण
- अनुमान प्रमाण
- उपमान प्रमाण
- शब्द प्रमाण

उत्तर-1(I) ईश्वरकृष्ण प्रणीत सांख्यकारिका के अनुसार गुण तीन होते हैं -

- सत्त्व गुण
- तम गुण
- रज गुण

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

• सत्व गुण :-
यह हल्का या लघु होता है। यह देवतादि में पाया जाता है।

• रज गुण :-
यह राजसिक प्रवृत्ति का होता है।

• तम गुण :-
यह गुण हिंसक पशुओं आदि में पाया जाता है।

खण्ड - ब

उत्तर - 5 वेदान्त सार के प्रारम्भ में ही वेदान्त सार के अनुबन्ध - चतुष्टय का उल्लेख कर दिया गया है। सदानन्द योगीन्द्र कृत वेदान्तसार के अनुसार,
~~अनुबन्ध नामानि~~
"अधिकारी विषय सम्बन्ध प्रयोजनानि अनुबन्ध नामानि।

वेदान्त - सार के अनुसार अनुबन्ध - चतुष्टय हैं-
• अधिकारी
• विषय
• सम्बन्ध
• प्रयोजन

किसी भी वेद को पढ़ने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि उस वेद को पढ़ने का अधिकारी कौन है, उस पुस्तक का विषय क्या है? पुस्तक और विषय में क्या सम्बन्ध है?

Do Not Write anything in this Portion

तथा उसका प्रयोजन (उद्देश्य) क्या है?
वेदान्त सार के प्रारम्भ में ही अनुबन्ध चतुष्टय का विवेचन इस प्रकार किया गया है —

क) **अधिकारी** :- किसी भी पुस्तक को पढ़ने से पूर्व यह जानना आवश्यक होता है कि उसे पढ़ने का अधिकार किसे है।

वेदाधिकारी को वेदांगों का अध्ययन करके चतुर्वेदों का समग्र ~~अर्थ~~ अर्थज्ञान उपलब्ध करना चाहिए। काम्य एवं निषिद्ध कर्मों का त्याग, नित्य, ~~नैमित्तिक~~ नैमित्तिक, आसनादि कर्मों से अपने पापों से रहित, साधन चतुष्टय सम्पन्न, प्रमाता होना चाहिए।

- **काम्य कर्म** :- जिन कर्मों को करने की कामना होती है। अर्थात् ये कर्म कामना-पूर्ति के लिए होते हैं। जैसे - स्वर्गप्राप्ति के लिए ज्योतिष्टोम यज्ञ।

- **निषिद्ध** — ये शास्त्र वर्जित कर्म हैं। जैसे - ब्रह्मण हत्या।

- **नित्य** :- ये प्रतिदिन के कर्म होते हैं - सन्ध्यावन्दनादि।

- **नैमित्तिक** :- किसी निमित्त की पूर्ति के लिए किए गए कर्म होते हैं।

- **प्रायश्चित** :- पाप प्रक्षालन के उद्देश्य से किए गए कर्म। जैसे - चन्द्रायण व्रत।

- **उपासना** :- ब्रह्म के लि[illegible] व्रतादि।

- **साधन चतुष्टय सम्पन्न** :- चार साधनों से युक्त —

Do Not Write anything in this Portion

- नित्यानित्य वस्तु विवेक
- इहामुत्रार्थफलभोग विराग
- षड़ादिषट्क सम्पत्ति
- मुमुक्षुत्व

प्रमाता :- बुद्धियुक्त तथा उपयुक्त साधनों से सम्पन्न व्यक्ति प्रमाता होता है।
जैसा कि कहा भी गया है -

"प्रशान्तचित्ताय जितेन्द्रियाय च
प्रहीणदोषाय यथोक्त कारिणे
गुणान्वितानुगताय सदैव
प्रमेयवेदमेतद सततं मुमुक्षवे।"

2- विषय :-
वेद पढ़ने का विषय ब्रह्म है। इसके तीन विषय हैं -

- ब्रह्म और जीव एक है।
- ब्रह्म और जीव शुद्ध चैतन्य है।
- ब्रह्म और जीव आनन्द है।

3- सम्बन्ध :-
वेद और विषय का क्या सम्बन्ध है, उपनिषद के अनुसार ब्रह्म विद्या का ही यहां वर्णन है।

4- प्रयोजन :-
प्रयोजन का अर्थ है - उद्देश्य।
अर्थात् इसका पाठन का उद्देश्य क्या है।
ब्रह्म को सत्य, नित्य, आनन्दस्वरूप मानकर मोक्ष की प्राप्ति इसका उद्देश्य है।

Paper Code

अनुबन्ध चतुष्टय

अधिकारी — विषय — सम्बन्ध — प्रयोजन

- वेदांगों - वेद का विधिवत् ज्ञान
- काम्य - निषिद्ध कर्मों का त्याग
- नित्य - नैमित्तिक - उपासना - प्रायश्चित कर्म से युक्त
- शुद्ध अन्तः करण
- साधन चतुष्टय सम्पन्न

इहमुत्रार्थफल भोग विराग

नित्यानित्य वस्तु विवेक

षडादिषट्क सम्पत्ति

मुमुक्षुत्व

- शम
- दम
- उपरति
- तितिक्षा
- समाधान
- श्रद्धा

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

खण्ड - स

उत्तर - ८ - 'अज्ञानं तु - - - - - - - इत्याद्यनुभवात् ।'

सन्दर्भ :- प्रस्तुत कारिका ईश्वरकृष्ण प्रणीत सांख्य-कारिका से उद्धृत है।

प्रसंग :- प्रस्तुत कारिका में सांख्यकारिकाकार अज्ञान का वर्णन कर रहे है। अज्ञान का वर्णन करते हुए कहते हैं -

व्याख्या :-

ईश्वरकृष्ण कहते हैं - अज्ञान सद् , असद् से परे अर्थात् अज्ञान न तो सद् है न असद् , त्रिगुणात्मक , ज्ञानविरोधी , भावरूप , और कुछ तो अवश्य है।

• सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं :-

अज्ञान न तो सद् रूप है और न ही असद् रूप है। अर्थात् अज्ञान न तो नित्य है क्योंकि नित्य वस्तु का नाश नहीं होता है लेकिन ज्ञान के प्रकट होने पर अज्ञान का नाश हो जाता है और अज्ञान असद् (अनित्य) भी नहीं है क्योंकि अनित्य की तो सत्ता ही नहीं होती है लेकिन ... से पूर्व अनित्य विद्यमान रहता है। अर्थात् अज्ञान , सद् - असद् दोनों ही नहीं है।

• त्रिगुणात्मक :-

अज्ञान तीनों गुणों (सात्विक , राजसिक , तामस) से युक्त है।

Paper Code

- **ज्ञान विरोधी :-**

अज्ञान ज्ञान विरोधी है। अर्थात् जैसे ही ज्ञान प्रकट होता है अज्ञान नष्ट हो जाता है।

- **भावरूप :-**

अज्ञान भाव रूप है उसका अभाव नहीं है क्योंकि ज्ञान के प्रकट होने से पूर्व अज्ञान रहता है।

- **यत्किञ्चित :-**

अज्ञान न तो सद् है न ही असद् अर्थात् अज्ञान कुछ तो अवश्य है। जैसे - अहं अज्ञानी अर्थात् (मैं अज्ञानी हूँ) यह अनुभव ही अज्ञान को बताता है।

इस प्रकार अज्ञान सद्, असद् से परे, ज्ञान विरोधी भावरूप, त्रिगुणात्मक है।

Do not write anything in this Portion

Paper Code

16

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

X

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

X

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

22

X

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion